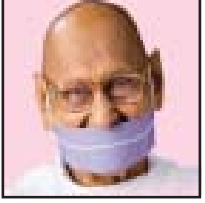


**मूल्यपरक शिक्षा : सिद्धान्त और प्रयोग**



सत्य त्रैकालिक होता है। यह देश-काल से अतीत होता है। किन्तु श्रवण, प्रवचन, वाणि्यां, सिद्धान्त-ये सब स्थान प्रतिबद्ध हो गये। सुबह-शाम भगवान् का नाम लेना, दिन भर उसकी विस्मृति हो जाये तो कोई बात नहीं। धर्म स्थान पर भगवान की पूरी चिन्ता करना और दुकान, घर या कार्यालय में उसे भूल जाना – यह आज की प्रवृत्ति है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कोरा सिद्धान्त उतना उपयोगी नहीं है, जितना प्रयोग के साथ वह उपयोगी बनता है। भाव परिवर्तन के लिये सिद्धान्त और प्रयोग- दोनों का समन्वय आवश्यक है। समन्वय जीवन का मूल्य है। इसलिए ज्ञान और क्रिया का समन्वय होना चाहिए। 'पढमं नाणं तओ दया' पहले ज्ञान और फिर क्रिया, पहले जानो फिर उसका अभ्यास करो।

सिद्धान्त या मूल्य-बोध को व्यर्थ नहीं माना जा सकता। उसकी सार्थकता है। यदि वह कोरा या अकेला है तो सार्थकता आधी हो जाती है, पूरी नहीं रहती। वह पूरी होती है अभ्यास या प्रयोग के द्वारा। पक्षी के दो पंख होते हैं। क्या वह दाएं पंख से उड़ता है या बाएं से? उत्तर होगा, न वह केवल दाएं पंख से उड़ता है और न वह केवल बाएं पंख से उड़ता है। वह दोनों से उड़ान भरता है। एक पैर से चला जा सकता है पर वह लंगड़ापन है। दोनों पैरों से ही ठीक चला जा सकता है। सिद्धान्त और अभ्यास, ये दो पंख हैं। इनके सहारे से ही ठीक उड़ान भरी जा सकती है। ये दो पैर हैं, इनके सहारे ही ठीक चला जा सकता है। – **आचार्य महाप्रज्ञ।**

**जीवन विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के नव-निर्मित भवन का लोकार्पण समारोह सम्पन्न**

लाडनूँ 20 जुलाई। 'मनुष्य में ज्ञान आवश्यक है। यदि सम्यक् ज्ञान होगा तो सम्यक् आचार भी संभव है।' उपरोक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने जैन विश्व भारती परिसर स्थित सुधर्मा सभा में जीवन विज्ञान शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के नवनिर्मित भवन के लोकार्पण समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। आचार्यश्री ने गुजरात से लाडनूँ की यात्रा का वर्णन करते हुए बताया कि वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में जबरदस्त जागरूकता आई है। **क्रमशः...पृष्ठ. 2 पैरा 1...**



**आओ हम जीना सीखें : कैसे सोचें?**

कैसे सोचें? यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। हर कार्य को करने का अपना एक तरीका होता है, एक शैली होती है। सोचने का भी तरीका होता है। योजनाबद्ध कलात्मक तरीके से किया गया प्रशस्त चिन्तन लाभदायक होता है। प्रशस्त सोच का पहला बिन्दु है-मित चिन्तन। अर्थात् सीमित चिन्तन। सीमातिरिक्त सोचना मनुष्य मनुष्य का स्वभाव सा बन गया है। वह निष्प्रयोजन सोचता रहता है। लक्ष्य-प्रतिबद्ध होकर आदमी सोचे तो बात समझ में आती है पर बिना ही प्रयोजन दिमाग में विचारों की उधेड़बुन चलती रहती है। आदमी सोता है विश्राम के लिए पर सोते समय दिमाग को खाली कर नहीं सोता। टी.वी. सीरियल की तरह दिमाग पर विचारों के प्रतिबिम्ब उभरते रहते हैं। आदमी पूरी और गहरी नींद नहीं ले पाता और वह अनिद्रा का शिकार हो जाता है। खाना खाते समय भी मन स्मृति और कल्पना के साथ उड़ान भरता रहता है। फलतः क्या खाया? कितना खाया अथवा खाया या नहीं? कभी-कभी यह भी भान नहीं रहता। आदमी चलता है। चलते समय भी विचारों का प्रवाह नहीं रुकता। कभी-कभी तो आदमी विचारों के प्रवाह में इतना खो जाता है कि उसका गंतव्य पथ छूट जाता है और वह दूसरे मार्ग पर चल पड़ता है।



यह सत्य है कि सामान्य व्यक्ति सर्वथा चिन्तनमुक्त नहीं हो सकता पर वह एक सीमा रेखा तो खींच ही सकता है। हालांकि समस्या के समाधान के लिये और नए सृजन के लिये चिन्तन करना अपेक्षित भी है पर चिन्तन कब करना? कितना करना? कैसे करना? यह विवेक भी आवश्यक है। – **आचार्य महाश्रमण।**

**जीवन विज्ञान व अणुव्रत वर्तमान की आवश्यकता : मुख्यमंत्री**

लाडनूँ 20 जुलाई। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि जीवन विज्ञान व अणुव्रत वर्तमान की जरूरत है। देश में हिंसा, आतंक व नक्सलवाद जैसी बड़ी चुनौतियों से निपटने के लिये संतों की वाणी आज भी प्रासंगिक है। गहलोत शनिवार को यहां जीवन विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के लोकार्पण के आद उपस्थित जनता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा की राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी संतों के संदेश को आत्मसात् कर देश **क्रमशः...पृ.2पै.2.**



पड़्या ज्यांका स्वभाव, जासी जीव स्यू।

नीम न मीठो होय, सींचो चाहे गुड़ और घीव स्यू।।

मारवाड़ी भाषा की यह प्राचीन उक्ति व्यक्ति के स्वभाव की अपरिवर्तनशीलता का सटीक उदाहरण है, परन्तु प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान के चौथे सिद्धान्त में बताया है कि परिष्कार संभव है। प्रबल पुरुषार्थ से जब व्यक्ति जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों को काट लेता है तो वर्तमान जीवन के स्वभाव को भी बदला जा सकता है। उन्होंने न केवल सिद्धान्त दिया अपितु परिवर्तन की प्रक्रिया बताते हुए अनेक प्रयोग भी बताए जिनमें मुख्य हैं – कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा और विवेक का जागरण।

कायोत्सर्ग सब दुःखों से मुक्ति देने वाला है, यह मात्र तनाव दूर करने की प्रक्रिया ही नहीं है। इससे तनाव दूर होता है, यह बहुत छोटा कार्य है। कायोत्सर्ग से समस्त दुःख दूर हो सकते हैं। यह केवल कथन ही नहीं यथार्थ है, सच्चाई है। प्रश्न कैसे? व्यक्ति जब आत्मा भिन्न; शरीर भिन्न की अवधारणा को भेद विज्ञान से स्पष्ट कर शाश्वत आत्मा का अनुभव करता है तो उसके कर्म क्षीण और स्वभाव परिष्कृत होने लगता है। यह सम्यग दर्शन का प्रथम चरण है।

स्वभाव बदलने का दूसरा उपाय है—अनुप्रेक्षा। अनुप्रेक्षा स्वतः सुज्ञाव की प्रक्रिया है। प्रेक्षा द्वारा प्राप्त सत्य का पुनः पुनः चिन्तन कर सुदृढता से सत्य का अनुभव करना अनुप्रेक्षा है। अनुप्रेक्षा आदत और स्वभाव को बदलने का अमोघ साधन है। आदत और स्वभाव को बदलने के साथ-साथ विशिष्ट मूल्यों का विकास भी अनुप्रेक्षा से संभव है। अनुप्रेक्षा जहां बुराइयों को दूर करती है, वहीं अच्छाईयों का विकास भी उससे किया जा सकता है।

स्वभाव बदलने का तीसरा तत्त्व है – विवेक। विवेक से अच्छे-बुरे के बीच भेद-रेखा खींची जा सकती है। 'विवेकः पृथगात्मता' विवेक ऐसा तत्त्व है जिससे व्यक्ति समझने लगता है यह करणीय है। यह अकरणीय है। जब करणीय-अकरणीय का विवेक जाग जाता है तब अकरणीय अपने आप छूटने लगता है। अपनी आदत दूर जाने लगती है। अतः कायोत्सर्ग कर अनुप्रेक्षा के प्रयोग से विवेक चेतना को जगाएं और सदा-सदा के लिए अपने स्वभाव को बदल लें।

“जीवन विज्ञान बिना शिक्षण अधूरा है। जीवन विज्ञान व्यक्ति को जीवन जीना सिखाता है। इसलिए शिक्षण में सम्पूर्णता के लिये जरूरी है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान के अभ्यासक्रम का समावेश हो।—अटलबिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री

**क्रमशः...पृष्ठ. 1 पैरा 1...** उन्होंने कहा कि शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य बालक को ज्ञान सम्पन्न बनाना, आत्मनिर्भर बनाना व उसके कोमल मन में संस्कारों का बीजारोपण करना है। यही शिक्षण संस्थानों से अपेक्षा है। झूठ व धोखाधड़ी नैतिकता के शत्रु हैं। उन्होंने शिक्षा के साथ राष्ट्रीयता की भावना के विकास को जरूरी बताते हुए कहा कि भौतिक एवं आर्थिक विकास आवश्यक है। इसी से पचास प्रतिशत अच्छे राष्ट्र का निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त शेष पचास प्रतिशत विकास नैतिक व आध्यात्मिक विकास से संभव है। उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान केन्द्र शिक्षा जगत् के लिये वरदान साबित होगा। आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ का भी यही उद्देश्य था। इस अवसर पर बेलि मठ बैंगलूरु के संत शिव रुद्रास्वामी ने विभिन्न धर्म- गुरुओं की ओर से आचार्यश्री को संत शिरोमणि की उपाधि से सम्मानित किया।

बालोतरा 5 जुलाई। 'आचार्य महाप्रज्ञ करुणाशील महामानव थे। उनका सम्पूर्ण जीवन विनय और समर्पण की गौरवगाथा है। 'हरि अनंत हरिकथा अनंता' की उक्ति महाप्रज्ञ पर खरी उतरती है। वे आचार्य तुलसी के सफल भाष्यकार थे।' उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ के 94वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में मुनिश्री मदनकुमार ने न्यू तेरापंथ भवन में आयोजित प्रज्ञा दिवस कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि जीवन में सब जीवों के साथ मैत्री जरूरी है। यही शान्ति का राजमार्ग है।

अपने विचार व्यक्त करते हुए मुनि जम्बूकुमार ने कहा कि जीवन में धर्म के साथ नैतिकता का विकास होना चाहिए। महाप्रज्ञ महायोगी और अणुव्रत के व्याख्याकार थे। उनके प्रवचन और साहित्य में चुम्बकीय आकर्षण था। पूर्व गृहराज्य मंत्री अमराराम चौधरी ने, मुनि धवलकुमार, मुनि पुनीतकुमार, पुखराज तलेसरा, चंपालाल गोलेच्छा, ओमप्रकाश बांठिया, शान्तिलाल डागा, सुरेश गोठी, विमलादेवी गोलेच्छा, नीलेश सालेचा ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम आयोजन में महिला मण्डल, कन्या मण्डल एवं युवक परिषद का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। कविता सालेचा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

**क्रमशः...पृ.1 पै.1.** की अनेक समस्याओं को सहजता से सुलझाया। आचार्य तुलसी व महाप्रज्ञ का स्मरण करते हुए उन्होंने बताया कि मुझे सदैव उनसे आशीर्वाद के साथ बहुत कुछ सीखने को मिला है। भगवान महावीर की वाणी आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। जैन विश्व भारती को संस्कारों का केन्द्र बताते हुए उन्होंने कहा कि जीवन विज्ञान जीने का सही ज्ञान दिखाता है। इसके माध्यम से शिक्षा को नया आयाम मिलेगा। चरित्र निर्माण, अनुशासन, सहनशीलता जैसे तत्त्वों से शरीर, बुद्धि, मन और भावों का विकास होता है। गहलोत ने कहा कि कोई समाज हिंसा की अनुमति नहीं देता। अहिंसा का सिद्धान्त दुनिया को नई दिशा देने वाला है। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर अन्तर्राष्ट्रीय जीवन विज्ञान शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान का निर्माण करवाने वाले देवराज मूलचन्द नाहर चैरिटेबल ट्रस्ट व माइक्रो लैब्स, बैंगलूरु के चेयरमैन दिलीप सुराणा को साधुवाद देते हुए कहा कि इस केन्द्र के निर्माण से उनका मकसद पूरा हो सकेगा। सुधर्मा सभा के मंच पर पहुंचते ही मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. चन्द्रभान ने आचार्यश्री महाश्रमणजी, मंत्रीमुनि मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूँ', साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी सहित सर्व साधु-साध्वियों का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम के दौरान मंचसंचालक ने सम्बोधन हेतु मुख्यमंत्री को बुलाना चाहा परन्तु उन्होंने कहा कि हम लोग यहां आचार्यप्रवर को सुनने आए हैं। इस पर पहले आचार्यश्री व बाद में मुख्यमंत्री ने अपना संबोधन दिया।

कार्यक्रम में बैंगलूरु से करीब 125 श्रद्धालुओं के साथ कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष डॉ.चन्द्रभान, राज्यमंत्री मंजू मेघवाल, सांसद ज्योति मिर्धा, विधायक भंवरलाल मेघवाल, रूपाराम डूडी, महेन्द्र चौधरी, जाकिर हुसैन, बच्छराज नाहटा, कुलपति जै.वि.भा., समणी चारित्रप्रज्ञा, कुलपति, जैन विश्व भारती संस्थान (माविवि), ताराचन्द रामपुरिया, अध्यक्ष, बंशीलाल बेद, मंत्री, जै.वि.भा., सागरमल नाहटा, मुख्य ट्रस्टी, नाहटा चेरी. ट्रस्ट, कोलकाता, सुरेन्द्र घोषल, अध्यक्ष, भागचन्द बरड़िया, मंत्री, आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, जगन्नाथ बुरडक, लियाकत अली, अंजना शर्मा, अभय जैन, नरेन्द्र बरमेचा, कमलसिंह खटेड़, आदि अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।